

## विचार बिन्दु

अधिकार जताने से अधिकार सिद्ध नहीं होता। -टैगोर

## संघ लोक सेवा आयोग परीक्षा में हिन्दी वालों का भविष्य

संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की 2021 की सिविल सेवा परीक्षा के इस बार के नतीजों ने एक बार फिर इसमें हिन्दी माध्यम के अभ्यर्थियों के सफल होने के अवसर का मुद्दा उठा दिया है। इस साल 685 उम्मीदवार सफल हुए हैं जिसमें राजस्थान के रवि कुमार सिहाग 18वें रैंक के साथ इस बार हिन्दी मीडियम से परीक्षा देने वालों में टॉपर बन कर इस मुद्दे को ऊपर ले आये हैं। 22वीं रैंक लाने वाले सुनील कुमार धनवंत हिन्दी मीडियम के दूसरे टॉपर हैं। तो क्या इस परीक्षा में अपना स्थान हासिल करने लगे हैं यह सवाल उचित ही है। सात साल के बाद हिन्दी माध्यम का कोई छात्र यूपीएससी पास करने वाले शीर्ष 25 उम्मीदवारों में जगह बना पाया है। इससे पहले सिविल सेवा की 2014 की परीक्षा में निशांत कुमार जैन 13वें स्थान पर रहे थे। पूछा जा सकता है कि क्या यूपीएससी पैटर्न में 2013 में हुए बदलाव के बाद, हिन्दी माध्यम में परीक्षा देने वालों के लिए यह बेहतर प्रदर्शन है? केवल टॉप 25 में हिन्दी मीडियम के दो सफल उम्मीदवारों को देखकर अभी से इस बात का अंदाजा लगाना मुश्किल है कि इस बार के नतीजे हिन्दी मीडियम वालों के लिए पिछले 9 सालों में सबसे बेहतर हैं या नहीं। यूपीएससी इस बात की जानकारी नहीं देती है कि सफल उम्मीदवारों ने किस मीडियम में परीक्षा दी थी, इसलिए इस प्रश्न का सीधा-सटीक उत्तर मिलना भी संभव नहीं है। किन्तु हिन्दी मीडियम में यूपीएससी परीक्षा देने वालों की संख्या का अंदाजा यूपीएससी की वार्षिक रिपोर्ट और लाल बहादुर शास्त्री नेशनल एकेडमी ऑफ़ एडमिनिस्ट्रेशन के आंकड़ों से मिलता है। कोचिंग संस्थानों के सर्वे से भी इन आंकड़ों की सच्चाई का एक अनुमान जरूर मिल जाता है।

देश की शासन व्यवस्था चलाने के लिए ब्यूरोक्रेसी की करीब 50 सेवाएं हैं। इनमें से लगभग आधे यानी 24 के लिए चयन सिविल सेवा परीक्षा के जरिए ही होता है। इस परीक्षा के जरिए तीन अखिल भारतीय सेवाओं में से दो यानी आईएएस और आईपीएस का चयन किया जाता है। वहीं भारतीय राजस्व सेवा (इनकम टैक्स), भारतीय राजस्व सेवा (कस्टम एंड एक्साइज ड्यूटी), भारतीय रेल की चार सेवाओं सहित कुल 22 केंद्रीय सेवाओं के लिए अफसरों का चयन इसी परीक्षा से होता है।

इस बार ऐसा जरूर लग रहा है कि यूपीएससी के परिणाम, बदलाव के बाद के सालों में बेहतर है। लेकिन यह अपवाद भी हो सकता है, क्योंकि 2020 और 2021 में तो हिन्दी मीडियम का एक भी अभ्यर्थी टॉप 100 में नहीं था और उसके पहले के तीन चार सालों के हालात भी ऐसे ही थे। मेन्स का सिलेबस बदलने के पहले, टॉप 100 में हिन्दी के 10-12 अभ्यर्थी होते थे। लेकिन नए सिलेबस पर 2013 में परीक्षा होने के बाद 2014 में जब परिणाम आया तो हिन्दी मीडियम का जनरल कैटेगरी से एक भी कैंडिडेट आईएएस नहीं बन सका। उस बार हिन्दी मीडियम का टॉपर 107 रैंक का था जबकि कुल सिलेबस करीब 25 ही लोगों का हुआ। हालांकि 2014 की परीक्षा में हिन्दी मीडियम के प्रदर्शन में सुधार दिखा और करीब पाँच प्रतिशत अभ्यर्थी इसमें सफल हुए उस साल हिन्दी मीडियम के टॉपर की रैंक 13वीं थी।

लाल बहादुर शास्त्री नेशनल एकेडमी ऑफ़ एडमिनिस्ट्रेशन की वेबसाइट पर मौजूद आंकड़ों के अनुसार, 2015 और 2016 की परीक्षा में हिन्दी मीडियम वालों की सफलता दर लगभग चार-पाँच प्रतिशत रही, लेकिन 2017 और 2018 की परीक्षा में ये आंकड़ा फिर से दो-तीन प्रतिशत के बीच पहुंच गया। 2017 की परीक्षा के जो नतीजे 2018 में आए उनमें हिन्दी मीडियम का टॉप रैंक 337 रहा। इस वजह से सामान्य श्रेणी के तहत हिन्दी मीडियम से परीक्षा देने वाला एक भी कैंडिडेट आईएएस, आईपीएस या आईआरएस अधिकारी नहीं बन सका। वेबसाइट पर 2019 और 2020 के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। यूपीएससी की वार्षिक रिपोर्ट में मेन्स लिखने वालों को देखकर पता चलता है कि 2015 के बाद से हिन्दी मीडियम से परीक्षा देने वालों का जो आंकड़ा गिर रहा है, वह 2019 और 2020 में भी गिरता गया है। साल 2015 में हिन्दी मीडियम से परीक्षा देने वालों की संख्या 2,439 थी जो 2019 में घटकर 571 और 2020 में 486 रह गई। इस साल हिन्दी मीडियम से परीक्षा पास करने वालों का सटीक आंकड़ा मिलना फिलहाल संभव नहीं है। जानकार लोग उम्मीद जता रहे हैं कि इस बार 50 से 60 लोग हिन्दी मीडियम से चयनित हुए होंगे लेकिन ये भी पैटर्न में बदलाव से पहले की तुलना में कम है।

2010 में खना समिति की सिफारिश के बाद 2011 से प्रारम्भिक परीक्षा का पुराना पैटर्न बदलकर दूसरे पेपर के रूप में सिविल सेवा आयोग परीक्षा को लाया गया जिसे लेकर पूरे काफ़ी विरोध और विवाद हुआ। 2014 में तो इसके खिलाफ जमकर विरोध प्रदर्शन होने के बाद यूपीएससी ने बासवान समिति बनाई, जिसकी रिपोर्ट आने के बाद 2015 से इसे क्वालिफाईंग बना दिया गया। प्रारम्भिक (प्रिलिमिनरी) के इस पेपर में अब किसी अभ्यर्थी को कुल 200 अंकों में से केवल 66 अंक ही लाने होते हैं। इसके बावजूद अब भी कई लोग इसे पूरी तरह हटाए जाने की मांग कर रहे हैं। यूपीएससी ने पीटी का पैटर्न बदलने के दो साल बाद यानी 2013 में मेन्स के पैटर्न और सिलेबस को भी बदल दिया। इस बदलाव की खासियत यह रही कि इसमें चुने जा सकने वाले वैकल्पिक विषय को दो (चार पेपर) से घटाकर एक (दो पेपर) कर दिया गया। इसके साथ ही, सामान्य अध्ययन के पेपरों को दो से बढ़ाकर चार कर दिया गया। निबंध और दो अनिवार्य भाषाओं के कुल तीन पेपर पहले की ही तरह बने हुए। इस बारे में सबकी राय एक जैसी नहीं है। किसी के अनुसार यह यूपीएससी की नीति और परीक्षा पैटर्न के चलते हुआ है, तो कोई इसे छात्रों की विफलता करार देते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो इसके लिए सरकार की नाकामी और देश के सिस्टम की विफलता को ज़िम्मेदार मानते हैं।

बहुत से लोग यूपीएससी में हिन्दी मीडियम के खराब प्रदर्शन की वजह अंग्रेज़ी के बढ़ते दबदबे को मानते हैं। उनका कहना है कि, प्रशासन में बैठे कुलीन लोग शिक्षा और भाषा को लेकर चुपची चुपचाए हुए हैं। उनकी यह चुपची बताती है कि अंग्रेज़ी के दबदबे को बढ़ाने में उनकी सहमति है। तो दूसरी तरफ यह भी कहा जा रहा है कि आज के दौर में जब किसी अधिकारी से अपेक्षा की जाती है कि वह दुनिया को जाने और उनसे इन्टरैक्ट करें तो इसके लिए अंग्रेज़ी जानना तो जरूरी होगा ही। छात्रों की इन बातों में ज्यादा वक़्त गंवाने के बजाय अंग्रेज़ी पर काम करने पर लगाना चाहिए। वहीं इस बार की परीक्षा में चयनित एक अभ्यर्थी का कहना है कि असल समस्या अंग्रेज़ी नहीं हिन्दी है। वर्ष 2011 में सी सेट आने से पहले करीब चार से पांच हजार छात्र हिन्दी मीडियम से मेन्स की परीक्षा देते थे, लेकिन 2015 में सी सेट की परीक्षा से अंग्रेज़ी के हटने के बाद भी यह आंकड़ा घटकर केवल पांच से छह सौ रह गया है। इसकी वजह अंग्रेज़ी नहीं हिन्दी का खराब और मशीनी अनुवाद है। जैसे एक दो साल पहले सिविल डिंस ओबिडिएंस मूवमेंट का अनुवाद असहयोग आंदोलन किया गया था। इंग्लिशेशन का अनुवाद उलझन, लैड रिफ़ॉर्म का अनुवाद आर्थिक सुधार किया गया था। दिक्कत यह है कि निदेश में लिखा होता है कि किसी गलती की सूत्रत में अंग्रेज़ी टेक्स्ट ही मान्य होगा। यूपीएससी ऐसा कहकर अपनी ज़िम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेती है।

यह भी दावा किया जा रहा है कि जब से सी सेट और मेन्स का नया पैटर्न आया है तब से मानविकी और कला के साथ-साथ ग्रामीण प्रत्यक्ष के विद्यार्थियों के लिए इस परीक्षा में आगे बढ़ना मुश्किल हो गया है। सीसेट यह कहकर लाया गया था कि इससे सभी पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए एक समान स्तर तैयार हो सकेगा, पर हुआ इसका ठीक उल्टा। 2011 के पहले की तुलना में अब केवल 10 फ़ीसदी हिन्दी मीडियम के विद्यार्थी ही पीटी क्वालिफ़ाई कर पा रहे हैं। मेन्स के सिलेबस मटीरियल की कमी 2015 या 2016 तक समस्या की वजह बनी, लेकिन पीटी की समस्या अब भी बनी हुई है। आंकड़े भी इसकी गवाही देते हैं। पैराग्राफ़ के जटिल अनुवाद, गणित और रोज़निंग के चलते जो इन चीज़ों में सहज नहीं हैं, उनके लिए सी सेट का पेपर क्वालिफ़ाईंग होते हुए भी आसान नहीं रह गया है। जानकारों का कहना है। आई कि यह पीटी पास करने वालों की संख्या बढ़ेगी तो हिन्दी मीडियम का प्रदर्शन भी सुधर जाएगा।

हिन्दी में परीक्षा देने वालों का खराब प्रदर्शन देश की शिक्षा व्यवस्था, अंग्रेज़ी को लेकर सरकारों की नीति, और देवनागरी लिपि को लिखने में अंग्रेज़ी की तुलना में ज्यादा वक़्त लगने आदि को भी माना जाता है। भाषा का न केवल संस्कृति के साथ संबंध गहरा संबंध होता है, बल्कि वह व्यक्तिकी आर्थिक हैसियत से भी गहराई से जुड़ी होती है। इसी से तकनीक की उपलब्धता भी तय होती है। इसके लिए सरकार को सहानुभूति वाला रवैया अपनाकर अनुकूल रुख अपनाना होगा, क्योंकि हर जाति और धर्म की तरह हर भाषा में प्रतिभा समान रूप से पाई जाती है। हमें उन पर परीक्षा करनी चाहिए जो निति के जरिए उनका विकास करना होगा, नहीं तो अंग्रेज़ी की ज़रूरत बताते-बताते एक दिन हमारी भाषा इतनी पिछड़ जाएगी और वैश्वीकरण के चक्कर में हम अपनी भाषा के साथ संस्कृति से भी विमुख हो जाएंगे।

-अतिथि संपादक,  
राजेन्द्र बोड़ा  
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

## राशिफल

बुधवार 22 जून, 2022

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत् 2079, रेवती नक्षत्र गुरुवाहारा प्रातः 6:14 तक, शोभन योग रात्रि 4:56 तक, तैलिल करण प्रातः 5:38 तक, चन्द्रमा मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मीन, मंगल-मीन, बुध-वृष, गुरु-मीन, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में। आज से राष्ट्रीय आषाढ़ मास आरम्भ होगा। आज पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:03 तक, शुभ 10:46 से 12:29 तक, चर 3:54 से 5:37 तक, लाभ 5:37 से सूर्योदय तक। राहुकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:19



पंडित अनिल शर्मा

**मेष**  
व्यक्तित्व परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक खर्च खर्च होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

**तुला**  
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

**वृष**  
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी और कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

**वृश्चिक**  
अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक अडचन दूर होने लगेंगे।

**मिथुन**  
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। परिवार में सुख-सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है।

**धनु**  
कुछ कठिन मामले सामने आ सकते हैं। शारीरिक व मानसिक परेशानी रहेगी। व्यापार के लिए यात्रा हो सकती है। स्वास्थ्य ठीक-ठाक रहेगा।

**मिथुन**  
धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है और शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सुसंदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

**मकर**  
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना बन सकती है। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

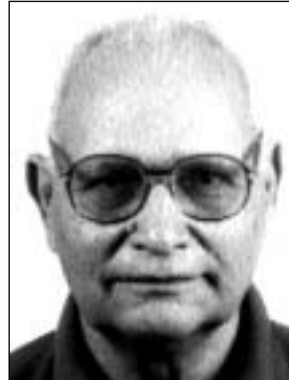
**सिंह**  
नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। बनते कार्य विगड़ने का भय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक परमारों से सहयोग मिल सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

**कुंभ**  
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

**कन्या**  
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सुसंदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चतते कार्यों में प्रगति होगी। आय में वृद्धि होगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक परमारों सह सम्पन्न हो सकते हैं।

**मीन**  
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्त रहेगी। नवीन कार्यों में आ रही अडचन दूर होने लगेंगी। नैकरोपेश व्यक्तियों का प्रभाव-पुण्य बढ़ेगा। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

## दर्पण कोशिकाएँ - मन दर्पण - 2



डॉ. श्रीगोपाल काबारा

ड्रिप्टेशन कोशिकाएँ : कुछ दिनों का अबोध नवजात शिशु। आपकी ओर देख रहा है। आप उसे जीभ निकाल कर चिढ़ाएँ। प्रतिक्रिया में शिशु भी जीभ निकाल देता है। यह कैसे हुआ? उसने जीभ निकालना कब सीखा? जीभ निकालते देखा और जीभ निकाल दी। यह सब दर्पण कोशिकाओं से संभव हुआ। दर्पण कोशिकाओं में दृश्य अनुरूप मांस-पेशियों को उद्बलित करने की क्षमता जन्मजात होती है जो और विकसित होती रहती है। आवाज सुन कर उसी अनुरूप स्वर-यंत्र की मांस-पेशियों को उद्बलित करने की क्षमता का आधार भी यही है। देख-सुन कर बोलना सीखने का यही आधार है। बड़ी उम्र में बहरा हुआ व्यक्ति आपके हाटों के हिलने और हाव-भाव से बोली समझ लेता है, जवाब देता है। बड़ई अपने पिता को काम करते हुए देख कर कापट कला में क्षमता और दक्षता हासिल कर लेता है। यह सब दर्पण कोशिकाओं का काम है। भाषा सीखने - लेंग्वेज लॉरिंग - में दर्पण कोशिकाओं की प्रमुख भूमिका होती है। भाव और भाषा द्वारा बहुआयामी संभेषण की आधार कोशिकाएँ दर्पण कोशिकाएँ होती हैं।

हाव-भाव, बाड़ी लेंग्वेज व एक्शन अन्डरस्टैंडिंग : प्रयोगों से यह ज्ञात हुआ है कि दर्पण कोशिकाओं में चेहरे के हाव-भाव और शरीर की भंगिमा को देख, उनका विश्लेषण कर, उनके पीछे उस व्यक्ति का सोच क्या है, यह समझने की क्षमता होती है। एक व्यक्ति टेबल पर रखे पानी के गिलास को उठाने के लिए हाथ बढ़ा रहा है। सामने वाले व्यक्ति के मस्तिष्क में दृश्य अंकित हो रहा है। दर्पण कोशिकाएँ लक्ष्यपरक कर्म के पीछे के सोच को समझने की क्षमता रखती हैं। आँखें बोलती हैं, मन के भाव वहाँ प्रतिलिखित होते हैं, चेहरे के भाव, शरीर की हर जुम्विश, भंगिमा, मन के भाव बोलते हैं। सामने वाले की दर्पण कोशिकाओं में सब प्रतिक्रियावित होता है- क्रियाएँ, कर्म, संवेग और सोच। आपका मन (दर्पण कोशिकाएँ) सामने वाले के मन (दर्पण कोशिकाएँ) का दर्पण होता है। हर कर्म में नियत सोच, विचार की चेतना, अनुभूति और स्मृति।

विचार और मांस-पेशियों का एक्शन पोटेन्शियल : किसी कर्म के पीछे विचार और आशय को समझने की विलक्षण क्षमता दर्पण कोशिकाओं में होती है। सामने वाले व्यक्ति ने दोनों मुट्टिओं बंद कर हाथ बाक्सर की मुद्रा में उठा लिए हैं, गुस्सेल नजरों से घूर रहा है। आपकी दर्पण कोशिकाएँ प्रतिक्रिया का आशय भांप जाती हैं कि सामने वाला आक्रमण करने वाला है। बचाव में आपकी भागना है। या मुकाबला करना है। और उसी के अनुरूप मांसपेशियों को तैयार रहने की सूचना भेजनी है। प्रयोग से मालूम हुआ कि विचार के अनुरूप प्रायोजित मांसपेशियों में उतेजना बढ़ जाती है, वे कार्य करने को तत्पर हो जाती हैं। यह तत्परता इलेक्ट्रिक एक्टिविटी - एक्शन पोटेन्शियल - के रूप में मांस-पेशियों में मापी जा सकती है। दर्पण कोशिकाओं

में बिम्ब और सामने वाले की मांस-पेशियों से जनिता बाँड़ी लेंग्वेज के अनुरूप आपकी मांस-पेशियों में प्रतिक्रियात्मक तैयारी हो जाती है। ये कोशिकाएँ सामने वाले के हाव, भाव, भंगिमा का बड़ा सूक्ष्म विश्लेषण करती हैं। आँखें बोलती हैं : एक प्रयोगकर्ता ने बंदर को अक्षर ज्ञान सिखाया। वे बंदर को अक्षर का नाम बोलते, उसकी ओर इशारा कर अक्षर पहचानवाते, फिर अक्षर का नाम बोल उसे हाथ से उठाने को कहते। सही अक्षर उठाने पर उसे उसकी प्रिय चीज इनाम के रूप में खाने को देते। बंदर अंग्रेजी वर्णमाला के सभी अक्षर पहचानने लगा। प्रयोगकर्ता बड़े फ़ख से इसको दिखाते। एक बार जब वे ऐसा करने को आये तो उन्होंने काला चश्मा पहन रखा था। अक्षर का नाम बोल कर उसे उठाने को कहा। बंदर

उनकी ओर ताकता रहा, उसने अक्षर नहीं उठाया। बार-बार कहने, फुसलाने, डाटने पर भी नहीं। तब चश्मा उतार कर उन्होंने बंदर से आँख मिलाई और आँख के इशारे से बोला गया अक्षर उठाने को कहा। बंदर ने तुरंत वह अक्षर पहचान लिया। चश्मा उतारें जितनी बार उन्होंने अक्षर पहचानाया, बंदर ने पहचाना। लेकिन जैसे ही प्रयोगकर्ता ने वापस चश्मा पहन कर ऐसा किया, बंदर अक्षर नहीं पहचान पाया। जाहिर था कि बंदर आँखों के सूक्ष्म इशारे के अंश में मस्तिष्क में बने प्रतिबिंब का आशय पहचान कर ऐसा कर रहा था। उसकी दर्पण कोशिकाएँ प्रयोगकर्ता के आँखों के बोल सुन और समझ रही थीं।

सामाजिक सरोकार, सभ्यता, संस्कृति : मनुष्यों में सामाजिक सरोकार की जनक दर्पण कोशिकाएँ ही हैं। बाहरी जगत से सतत समग्र संवाद का माध्यम ये कोशिकाएँ हैं। भाषा और बोली का विकास इन्हीं से संभव हुआ है। भावानुभूति और भावभाव्यविकृत का आधार इन्हीं से है। दर्शनात्मक दर्पण कोशिकाएँ ही हैं। ओटिज्म, जिसका प्रमुख लक्षण बच्चे में सामाजिक सरोकार और सभ्यत्व बनाने में कमी होती है, दर्पण कोशिकाओं में दोष के कारण होती है।

सेल्फ़ इमेज : ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त सतत संवेगों के समन्वय से स्वयं के शरीर का मानसिक चित्र दायें टॉकस के अग्र भाग में बनता है। वहाँ स्थित दर्पण कोशिकाएँ इस स्वचित्र के निर्माण और इसके बाहरी जगत से संवाद और

सरोकार में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। बाहरी जगत से बहुआयामी संवाद केन्द्र-बिन्दु ये ही होती हैं। किसी भी प्राणी का अस्तित्व सर्वथा स्वतंत्र नहीं होता। अपनी सेल्फ़ इमेज के आधार पर प्राणी सदा अपने परिवेश से सतत संवाद कर जुड़ा रहता है। इस बहुआयामी सतत संवाद से ही जीवन संभव है।

ट्रांसक्रैनिनियल मेग्नेटिक रिटमुलेशन : इस विधि में एक उपकरण द्वारा चुम्बकीय तरंगें उत्पन्न की जाती हैं। ये तरंगें बिजली के करंट जैसे खोपड़ी की हड्डी के पर जा कर मस्तिष्क को प्रभावित कर सकती हैं। उपकरण को खोपड़ी पर उचित जगह रख वहाँ अन्दर स्थित मस्तिष्क के चिन्हित भाग को उद्बलित या क्रियाशून्य किया जाता है। प्रयोगकर्ताओं ने मनुष्य में चिन्हित दर्पण कोशिकाओं को उद्बलित या क्रियाशून्य कर उसका असर देखा।

क्रियाशून्य हुई दर्पण कोशिकाओं से सम्बंधित लक्ष्य परक कर्म के पीछे विचारों को अंकने और उसके अनुरूप आचार, व्यवहार और समाजिक सरोकार में कमी मिली। इस प्रकार दर्पण कोशिकाओं के चिन्हित सम्बंध की कार्यक्षमता को पहचाना गया। अब इस विधि से मस्तिष्क के चिन्हित भागों को प्रभावित कर मानसिक रोगों का उपचार किया जाता है, विशेषकर उनका जो दवाओं से ठीक नहीं होते या ठीक नहीं हो सकते।

डॉ. श्रीगोपाल काबारा  
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

## बीछवाल में बायोलॉजिकल पार्क के पास ही 25 हैक्टेयर में बनेगा बाँटैनिकल गार्डन

बीकानेर, (कासं)। जल्दी ही बीकानेर की जनता को बीछवाल में 25 हैक्टेयर में तैयार बाँटैनिकल गार्डन मिलेगा जो रमणीय स्थल होने के साथ ही राजस्थान की जलवायु वाले पेड़-पौधों की जानकारी भी देगा। इस पर पंच करोड़ रूपए खर्च होंगे। बीकानेर में वन विभाग बाँटैनिकल गार्डन बना रहा है। इसके लिए बीछवाल में बायोलॉजिकल पार्क के पास 25 हैक्टेयर जमीन चिह्नित कर ली गई है। इसमें राजस्थान की जलवायु में पनपने वाले अलग-अलग प्रजाति के पौधे लगाए जाएँगे।

ये पौधे ब्लॉक बनाकर आकर्षक तरीके से लगाए जाएँगे और उनके बारे में जानकारी भी अंकित की जाएगी। वन विभाग गार्डन को टूरिज्म से जोड़ेगा। उसे रमणीय बनाया जाएगा जिससे कि स्थानीय लोगों के साथ-साथ बाहर से आने वाले लोगों भी वहाँ पहुंचकर जानकारी हासिल कर सके। जल्दी ही बाँटैनिकल पार्क की डीपीआर तैयार की जाएगी। चिह्नित

■ शहर का बायोलॉजिकल पार्क टूरिज्म सेंटर होगा

जमीन का सर्वे कर तय किया जाएगा कि कुल कितने पौधे लगेंगे और उनके बीच की दूरी क्या होगी। बबूल, पलाश, खैरज, अमलताशा, बोरडी, कैर, जाल, रोहिड़ा, गोरख इमली, झरबेला, फोग, नीम, ऐलोबिरा, कुमटा। इनके अलावा औषधीय पौधे कंदकारी, पीली कंटौली, अश्वगंधा, प्रायोगिक तौर पर शहतूत व अन्य पौधे भी लगाए जाएँगे। शहर के नजदीक बीछवाल में वन विभाग के पास खासी जमीन है। वहीं बायोलॉजिकल पार्क भी तैयार किया जा रहा है जो बीकानेर शहर में टूरिज्म सेंटर होगा। इसे देखते हुए बाँटैनिकल पार्क की बायोलाॉजिकल पार्क के पास ही बनाने का फैसला किया गया है जिससे कि पर्यटन को बढ़ावा मिले।

## नवजात का शव कचरे में फेंका

जोधपुर, (कासं)। शहर के न्यू पावर हाउस रोड स्थित इंद्रा गांधी पार्क के पास में बने डंपिंग स्टेशन पर आज सुबह स्कूटी पर सवार होकर आई महिलाओं ने एक नवजात का शव कचरे में फेंका और भाग निकली। सूचना मिलने पर पुलिस भी घटनास्थल पर पहुंची और नवजात के शव को बरामद कर अस्पताल की मोचरी में रखवाया। नवजात कन्या होना बताया गया है।

सेक्टर 4 एएम के नजदीक कचरा बीनने वाली एक लडकी ने क्षेत्र के लोगों को बताया कि एक स्कूटी पर सवार होकर आई दो महिलाएँ एक प्लास्टिक के कट्टे में कोई चीज कचरा पात्र में फेंक कर गईं हैं। थोड़ी देर बाद लडकी ने बताया कि इसमें एक बच्ची है। इससे लोग चौंक उठे।

सूचना मिलने पर वार्ड नंबर 49 दक्षिण के पार्षद दैलतसिंह भी मौके पर पहुंचे। आशंका है कि नवजात कन्या के शव को अवैध पैदाइश छुपाने के इरादे से डाला गया। क्षेत्र में आस पास लगे सीसीटीवी फुटेज से स्कूटी सवार महिलाओं के बारे में पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है।

## प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सिरस में 3 माह से चिकित्सक का पद रिक्त

निवाई, (निंसं)। राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सिरस में चिकित्सक व एएनएम का पद रिक्त होने से मरीजों को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है।

सरपंच शिवजीराम जाट, ताराचंद चौधरी, रमेश गोस्वामी, लक्ष्मण सिंह चौहान, गिरधर सिंह व नेमीचंद जैन सहित अन्य लोगों ने बताया कि चिकित्सा विभाग की अनेदखी के चलते स्वास्थ्य केंद्र पर असुविधा बनी हुई है।

उन्होंने बताया कि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में नियुक्त चिकित्सक का स्थानांतरण हो जाने के 3 माहों के बाद भी दूसरा चिकित्सक नहीं लगाया गया है। इसकी वजह से मरीजों को टॉक या निवाई जगह पड़ता है। वर्तमान में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र एक कंफांडर के भरोसे ही चल रहा है।

ग्रामीणों ने बताया कि चिकित्सा विभाग द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर चिकित्सक लगाने के बजाय कार्यरत कम्पाउण्डर का ट्रांसफर भी

■ कंफांडर का भी एएनएम का पद पहले से ही है रिक्त

■ मरीजों को हो रही है परेशानी

करने के आदेश कर दिए हैं जिससे ग्रामीणों में रोष व्याप्त हो गया है। स्वास्थ्य केंद्र में एएनएम का पद भी काफ़ी समय से रिक्त चल रहा है जिसकी वजह से प्रसव पीड़ित महिलाओं को दूर-दराज में अन्वत्र ले जाना पड़ता है जिससे भारी परेशानी उठानी पड़ रही है।

सरपंच शिवजीराम जाट सहित ग्रामीणों ने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी टॉक से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सिरस पर चिकित्सक व पूरा स्टाफ़ लगाने की मांग की है।

## भारत के सभी धर्मों में आदिकाल से रहा है योग का महत्व

ने योग का गूढ़ ज्ञान पौराणिक सप्त ऋषियों को दिया था।

सिंधु, सरस्वती घाटी सभ्यता में योग साधना करती अनेक आकृतियों के साथ प्राप्त देरों मुहरें एवं जीवाश्म अवशेष इस बात के प्रमाण हैं कि प्राचीन भारत में योग का अस्तित्व था। वैदिक एवं उपनिषद परम्परा, शैव, वैष्णव तथा तंत्रिक परम्परा, भारतीय दर्शन, रामायण एवं श्रीमद् भगवत गीता समेत महाभारत जैसे महाकाव्यों, बौद्ध एवं जैन परम्परा के साथ-साथ विश्व की लोक विरासत में भी योग मिलता है। महर्षि पतंजलि ने उस समय के प्रचलित प्राचीन योग अभ्यासों को व्यवस्थित व वर्गीकृत किया और उनके निरन्तरिथ और इससे संबंधित ज्ञान को पांतजलीयोगसूत्र नामक ग्रन्थ में क्रमबद्ध तरीके से व्यवस्थित किया।

सनातन धर्म में योग दर्शन : योग शब्द का अर्थ समाधि अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध है। योग की प्रमुख चार पद्धतियाँ सनातन धर्म में प्रचलित रही हैं ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग एवं राजयोग। गीता में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कर्म योग एवं ज्ञान योग के बारे में संदेश दिया है। इसी प्रकार हठयोग में ह का अर्थ सूर्य अर्थात् गिंगला नाडी एवं ठ का अर्थ चन्द्र अर्थात् सुषुम्ना नाडी



हरिओमसिंह गुर्जर

या स्वरों का मिलन से है। महर्षि पतंजलि ने चित्त की वृत्तियों को पांच भागों में विभक्त किया है। प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति। इन पांचों प्रकार की क्लिष्टि और अक्लिष्ट वृत्तियों को रोक देना ही योग है। महर्षि पतंजलि का अष्टांग योग, सार्वभौमिक, सार्वदैविक, सार्वकालिक, प्रामाणिक व वैज्ञानिक माना जाता है। इसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि प्रमुख हैं।

स्वामी विवेकानन्द का भक्ति योग,

महर्षि अरविन्द के दर्शन में सम्पूर्ण जीवन योग है और सम्पूर्ण मानवीय क्रियाएँ योग है। वर्तमान में स्वामी रामदेव द्वारा पतंजलि योगपीठ के माध्यम से भारतीय जनमानस तक योग के महत्व को सारकाल किया जा रहा है।

बौद्ध योग दर्शन : ध्यान बौद्ध साधना का हृदय है। बौद्ध परम्परा के अनुसार अकुशल चित्त के कारण ही साधक को संसार प्रमण करना पड़ता है। इसलिए चित्त को स्थिर करने के लिये ही ध्यान की आवश्यक है। अर्थात् किसी एक पवित्र विषय पर चित्त स्थिर करना ही ध्यान है।

बौद्ध योग की भारत में प्रचलित ध्यान प्रणाली विपथ्यना है। विपथ्यना के लिए तीन शत हैं जिनमें अनित्य का ज्ञान, दुःखः का ज्ञान, और अनात्म का ज्ञान होने पर ही विपथ्यना प्रगट होती है। विपथ्यना में मौन का कड़ाई से पालन कराया जाता है।

जैन योग दर्शन : भगवान महावीर के सेकड़ों शिष्य केवलज्ञानी, अवधिज्ञानी और मनः पर्ययज्ञानी थे। जैन योग में चार युग देखने को मिलते हैं ध्यान योग, शास्त्रीय ज्ञान और मंत्र योग, उसके बाद तंत्र, मंत्र एवं हठ योग तथा उसके बाद प्रेशाध्यान योग का अध्ययन हुआ। प्रेशा ध्यान में कायोसर्ग, श्वास प्रेशा,

शरीर लेखा, चैतन्य केंद्र प्रेशा और लेखा ध्यान प्रमुख योग पद्धतियाँ हैं।

आचार्य श्रमाश्रमण ने वि.सं. छठी शताब्दी में ध्यान शतक की रचना की, कुन्दकुन्द, जिनभद्राणि श्रमाश्रमण और कुन्दकुन्द के ग्रन्थों में ध्यान की मौलिक पद्धत सुनिश्चित है। आचार्य हरिभद्र ने विक्रम आठवीं शताब्दी में महर्षि पतंजलि के योगदर्शन की पद्धति को जैन साधना पद्धत के साथ जोड़ा। 'नमस्कार महामंत्र कल्प', 'पयावती कल्प', 'भैरव कल्प', 'शतु जय कल्प' आदि अनेक कल्पों एवं जय विधियों का निर्माण हुआ। शुभचन्द ने 'ज्ञानार्णव' और आचार्य हेमचन्द्र के 'योगशास्त्र' की रचना की। आचार्य रत्नश